निर्णायक मोड़ पर अण्णा आंदोलन

राष्ट्रीय परिदृश्य में अण्णा अत्यंत आहत नजर आते हैं। अण्णा टीम के लीडरान एक अनुशासित और सुसंगठित टीम की तरह काम अंजाम न देकर, मनमानी बयानबाजी और आचरण कर रहे हैं। इससे अण्णा टीम की राष्ट्रीय छवि धूमिल हो रही है। भयानक भ्रष्ट्राचार के ज्वलंत प्रश्न पर अण्णा आंदोलन को भारतीय जनमानस का राष्ट्रव्यापी समर्थन हासिल हुआ और लुंज-पुंज लोकपाल बिल पेश करके भयानक भ्रष्ट्राचार का परिपोषण करने की शासकीय साजिश का शानदार पटाक्षेप हुआ। लोकसभा में सभी सांसदों के मध्य ताकतवर लोकपाल बिल संसद में पारित करने के लिए आम सहमति का सृजन हुआ। आजकल अण्णा का मौनव्रत कुछ महत्वपूर्ण निर्णय लेने की दिशा में गामजन हो रहा है। अण्णा उन ताकतों को भी बेनक़ाब करने जुटे हैं जोकि भ्रष्ट्राचार पर कडी़ लगाम कसने वाले विधेयक की राह में रोडा़ बने रहे हैं। अण्णा ने गैंग ऑफ फोर के तहत उन काँग्रेस लीडरान पर सीधा निशाना लगा दिया, जिन लीडरान को सारा देश जानता पहचानता है।

जननायक अण्णा ब्लाग के आधिकारिक लेखक जर्नलिस्ट राजू पारुलेकर द्वारा ब्लाग पर जनआंदोलन के प्रणेता अण्णा की ओर से लिखा गया कि इंडिया अगेंस्ट करप्शन की कोर कमेटी का बाकायदा पुनर्गठन किया जाएगा और इसमें पूर्व न्यायाधीषों एवं पूर्व सेनानायकों को शामिल किया जाएगा। आजकल मौनव्रत धारण किए अण्णा, इंडिया अगेंस्ट करप्शन मूवमेंट में एक अनोखा आयाम सृजित करने की तैयारी में जुट गए हैं। उल्लेखनीय है कि 17 अक्टूबर से अण्णा ने मौनव्रत धारण किया और केवल लिख कर अपने विचार प्रकट कर रहे हैं। इंडिया अगेन्सट करप्पशन की कोर कमेटी की गाजियाबाद में आयोजित मीटिंग में अण्णा ने शिरक़त नहीं की। इंडिया अगेंस्ट करप्शन की कोर कमेटी में फिलहाल 24 सदस्य हैं। कोर कमेटी के सदस्य जलपुरुष राजेंद्र सिंह और आदिवासी इलाकों में सक्रिय सोशल लीडर पीवी राजगोपाल पहले ही कमेटी से इस्तीफा दे चुके हैं। अण्णा टीम के लीडर मेधा पाटेकर और कुमार विश्वास ने अण्णा के समक्ष कोर कमेटी में आवश्यक परिवर्तन करने और इसे विस्तारित करने की पुरजोर माँग पेश की थी।

इंडिया अगेन्सट करप्पशन के अनेक अग्रणी लीडर विवादों में घिर गए। सबसे पहले सुप्रीमकोर्ट के वरिष्ठ एडवोकेट्स शांतिभूषण और प्रशांतभूषण उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा आबंटित प्लाट्स हासिल करने के कारण विवाद में आए। इसके पश्चात पूर्व इंकमटैक्स ऑफिसर अरविंद केजरीवाल शासकीय नौकरी के दौरान लिए गए नौ लाख रुपयों का सरकारी कर्ज ना चुकाए जाने के कारण विवादित हो गए। आर्य समाजी लीडर स्वामी अग्निवेश रामलीला मैदान में जारी अण्णा अनशन को दौरान प्रचारित सीडी के कारण विवाद में घिर गए और टीम अन्ना से अलग कर

दिए गए। अण्णा टीम के एडवोकेट प्रशांतभूषण ने कश्मीर घाटी में जनमत संग्रह कराने का अत्यंत विवादस्पद बयान दे डाला। यथाशीघ्र स्वयं अण्णा ने खुद को और अण्णा टीम को प्रशांतभूषण के विवादस्पद बयान से पृथक किया। पूर्व पुलिस ऑफिसर किरण बेदी पर इल्जाम आयद किया गया कि किरण बेदी द्वारा अपनी हवाई यात्राओं के गैलेंटरी टिकट मूल्य को हेराफेरी करके अनेक एनजीओ से बढा चढा कर वसूला गया। कोर कमेटी के एक अन्य अत्यंत महत्वपूर्ण लीडर जस्टिस संतोष हेगडे ने हिसार लोकसभा उप-चुनाव के लिए गए निर्णय को गलत क़रार दिया और कहा कि कोर कमेटी की किसी मीटिंग में यह फैसला नहीं लिया गया। अपने इसी रोष के कारण जस्टिस एन. संतोष हेगडे ने कोर कमेटी की मीटिंग का यह कहते हुए बायकाट कर दिया कि इंडिया अगेन्सट करप्पशन की असल कोर कमेटी तो वस्तुतः राष्ट्र के 121 करोड़ भारतवासी हैं।

अण्णा जनलोकपाल विधेयक का बिगुल बजाने के पश्चात चुनाव सुधार विधेयक के लिए दुंदुभी बजाने के लिए कमर कस रहे हैं। 74 वर्ष की आयु में अण्णा का जीवट, उनकी प्रतिबद्धता, उनका समर्पण देखते ही बनता है। जन नायक अण्णा ने 13 दिनों तक जारी राष्ट्रव्यापी जन उभार से परिपूर्ण जद्दोजहद के पश्चात अपने अनशन का पटाक्षेप अंजाम देते हुए, राष्ट्र के नाम अपने पैगाम में साफ तौर पर फरमाया था कि जन-लोकपाल विधेयक के ज्वलंत प्रश्न पर जनगण को अभी तो आधी अधूरी फतह हासिल हुई, संपूर्ण विजयश्री तो तब ही प्राप्त होगी, जबकि ताकतवर जन-लोकपाल विधेयक को संसद पारित कर देगी। अपने पैगाम में अण्णा ने देश को संबोधित करते हुए कहा कि उनका संघर्ष वस्तुतः व्यवस्था परिवर्तन के लिए जन-लोकपाल बिल तो उस दिशा में महज एक कदम है। अभी तो लड़ाई का आग़ाज हुआ और संवैधानिक मक़सद को हासिल करने के खातिर अमीर-गरीब के मध्य उत्पन्न भयावह आर्थिक फर्क को खत्म करना होगा। सत्ता के विकेंद्रीकरण द्वारा ग्राम सभाओं को असल ताकत प्रदान करनी होगी।

केंद्र की मनमोहना हुकूमत ने पश्चिमी पूँजीवाद का अनुकरण करते हुए राष्ट्र को भस्मासुर मँहगाई और भयानक भ्रष्ट्राचार के दलदल में धकेल दिया। इस गहन अंधकार में अण्णा आंदोलन उजाले की रश्मि बनकर उभरा तो जैसे समूचा देश जैसे दिवाना हो उठा। पार्टीगत, जातिगत, क्षेत्रीय और मजहबी संकीर्णताओं का परित्याग करते हुए राष्ट्र के नागरिकों ने अण्णा आंदोलन में जबरदस्त शिरक़त अंजाम दी। अन्ना आंदोलन से उभरती हुई मध्यवर्गीय जन-चेतना को सौ करोड़ गरीब किसान-मजदूर जनमानस की महान् चेतना तक विस्तारित करना होगा। करप्ट क्रिमिनल्स को राष्ट्र के नक्शे से तभी खत्म किया जा सकेगा, जबकि राजसत्ता के सबसे अहम स्तंभ लैजिस्लेटिव से करप्ट क्रिमिनल्स का आम चुनाव में जनमानस सफाया कर दे। यह काम अंजाम तक पंहुच जाए तो हुकूमत के गलियारों में करप्ट क्रिमिनल्स कदाचित मिनिस्टर्स

बन ही नहीं सकेगें। शीर्ष राजसत्ता पाक़ साफ हो गई तो ब्यूरोक्रेसी और जूडिशयरी की क्या बिसात कि करप्शन कर सके। मुल्क से करप्शन को देशनिकाला देने की कुव्वत कदाचित महज् किसी कानूनी एक्ट में निहित नहीं है। यह असीम शक्ति तो केवल देश की मूक, निरीह, लाचार, बेबस कहलाने वाले जनमानस में ही निहित है, जिसे अन्ना हजारे ने जागृत करने का कामयाब प्रयास अंजाम दिया। जनमानस जागृत होकर करप्ट पॉलिटिशियन्स का चुनाव के दिन सफाया कर सकती है, जो उसे अकूत धन-दौलत के दमखम पर जात-बिरादरी और कौम-मजहब, प्रांत-भाषा के नाम पर बहका और बरगला कर पार्लियामेंट अथवा लैजिस्लेटिव ऐस्मबली में दाखिल होता रहा है।